भाकृअनुप–भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल

भारत के सभी क्षेत्रों में 16–30 दिसंबर, 2023 के दौरान बुआई एवं अन्य प्रथाओं के लिए परामर्श

फसल सत्र 2023–24

सिरसा जिले के कुछ क्षेत्र तथा उत्तर प्रदेश का गन्ना उत्पादक क्षेत्र, बिहार तथा महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश के वह क्षेत्र जिनमें भारी वर्षा के कारण गेहूँ की देरी से बुआई की रिपोर्ट मिल रही है। आगामी 10 दिनों में वर्षा और तापमान के पूर्वानुमान के सम्बन्ध में आईएमडी से प्राप्त सूचना के आधार पर, विभिन्न राज्यों और क्षेत्रों के लिए निम्नलिखित परामर्श जारी की जाती हैं।

देरी से बोई जाने वाली गेहूँ की उपयुक्त किस्में

उत्तरी भारत में गन्ना, आलू, कपास, धान एवं सरसों की देर से कटाई से होने के कारण कुछ किसान गेहूँ की बुआई बहुत देरी से कर रहे हैं। अति पछेती गेहूँ की बुआई के लिए उपयुक्त किस्में नीचे तालिका में दी गई हैं।

क्षेत्र	उत्पादन की दशा	गेहूँ की उपयुक्त किस्में
उत्तर पश्चिमी मैदानी क्षेत्र : पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश एवं राजस्थान के कुछ भाग	25 दिसम्बर तक सिंचित एवं देरी से बीजाई के लिए	पीबीडब्ल्यू 771, डीबीडब्ल्यू 173, जेकेडब्ल्यू 261
उत्तर पूर्वी मैदानी क्षेत्र : पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल एवं झारखंड		डीबीडब्ल्यू 316, पीबीडब्ल्यू 833, एचडी 3118
मध्य क्षेत्रः मध्य प्रदेश, गुजरात एवं राजस्थान		एचडी 3407, एचआई 1634 एवं एमपी 3336
सभी क्षेत्रों के लिए	25 दिसम्बर के बाद सिंचित एवं अधिक देरी से बीजाई के लिए	एचडी 3271, एचआई 1621 एवं एचडी 2851

बीज दर (देर से बीजाई)

गेहूँ की देरी से बीजाई के लिए उपर्युक्त किस्मों का 125 किलोग्राम प्रति हैक्टर बीज की मात्रा उपयुक्त रहती है। पंक्ति से पंक्ति की दूरी 17–20 सेंटीमीटर तथा पौधे से पौधे के बीच की दूरी 5 सेंटीमीटर रखनी चाहिए। बीज की अधिक व कम गहराई नहीं होनी चाहिए।

उर्वरकों की मात्रा

उच्च उर्वरता वाली भूमि के लिए नाइट्रोजन 120, फास्फोरस 60 एवं पोटाश 40 किलोग्राम/हैक्टर की दर से प्रयोग करें। नाइट्रोजन की एक तिहाई मात्रा तथा फास्फोरस और पोटाश की पूरी मात्रा बीजाई के समय, नाइट्रोजन की एक तिहाई मात्रा पहली सिंचाई पर तथा शेष एक तिहाई मात्रा दूसरी सिंचाई पर प्रयोग करें।

खरपतवार प्रबंधन

- नाइट्रोजन की मात्रा का प्रयोग बुआई के 40–45 दिन बाद तक पूरा कर लेना चाहिए। सिंचाई से ठीक पहले यूरिया डालें।
- संकरी पत्ती वाले खरपतवारों को नियंत्रित करने के लिए क्लोडिनाफॉप 15 डब्ल्यूपी/160 ग्राम प्रति एकड़ या पिनोक्साडेन 5 ईसी 400 मिलीलीटर प्रति एकड़ लगाएं। चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों को नियंत्रित करने के लिए 2,4–डी 500 मिली/एकड़ या मेटसल्फ्यूरॉन 20 डब्ल्यूपी 8 ग्राम प्रति एकड़ या कारफेंट्राजोन 40 डीएफ 20 ग्राम/एकड़ की दर से छिड़काव करें।

- संकरी और चौड़ी पत्ती वाले दोनों तरह के खरपतवार हों तो पहली सिंचाई से पहले या सिंचाई के 10–15 दिन बाद सल्फोसल्फ्यूरॉन 75 डब्लूजी 13.5 ग्राम/एकड़ या सल्फोसल्फ्यूरॉन+मेटसल्फ्यूरॉन 16 ग्राम/एकड़ 120–150 लीटर पानी में मिलाकर प्रयोग करें। .
- बहुशाकनाशी प्रतिरोधी फैलेरिस माइनर (कनकी/गुल्ली डंडा) के नियंत्रण के लिए, बुआई के 0–3 दिन बाद पाइरोक्सासल्फोन 85 डब्ल्यूजी 60 ग्राम/एकड़ की दर से छिड़काव करें या क्लोडिनाफॉप + मेट्रिब्यूजिन 12+42 प्रतिशत डब्ल्यूपी 200 ग्राम/एकड़ के तैयार मिश्रण का छिड़काव पहली सिंचाई के 10–15 दिन बाद 120–150 लीटर पानी में घोल बनाकर उपयोग करें।
- गेहूँ की देरी से बुआई के लिए पंक्ति से पंक्ति दूरी 17.5 सेमी तथा 50 किलोग्राम/एकड़ की दर से बीज का उपयोग करें।
- उच्च उर्वरता वाली भूमि में गेहूँ की अगेती बुआई की दशा में 0.2 % क्लोरमेक्वाट क्लोराइड (50 % एसएल) + 0.1 प्रतिशत टेबुकोनाजोल (25.9% ईसी) के मिश्रण संयोजन का 160 लीटर/एकड़ पानी की दर से पहला छिड़काव पहली गाँठ बनते समय (बुआई के 50–55 दिन पर) करें।
- किसानों को फसल पर छिड़काव मौसम साफ होने पर करना चाहिए।

16–30 दिसंबर, 2023 के दौरान मौसम की स्थिति

- इस अवधि के दौरान उत्तर, उत्तर पूर्वी एवं मध्य भारत में अधिक वर्षा होने की संभावना नहीं है।
- उत्तरी एवं उत्तर पूर्वी भारत में अधिकतम तापमान 20 डिग्री सेल्सियस जबकि मध्य और प्रायद्वीपीय भारत में 25 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रहने की संभावना है।
- उत्तरी एवं उत्तर पूर्वी भारत में न्यूनतम तापमान 10 डिग्री सेल्सियस जबकि मध्य एवं प्रायद्वीपीय भारत में 15 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रहने की संभावना व्यक्त की जाती है।

15/12/23

(ज्ञानेन्द्र सिंह)
निदेशक
भाकृअनुप–भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान
करनाल, हरियाणा